

तपतीरे मनीकरण के हरि हरे
सायुज्य मुक्ति पटी

हरि ओम् हर

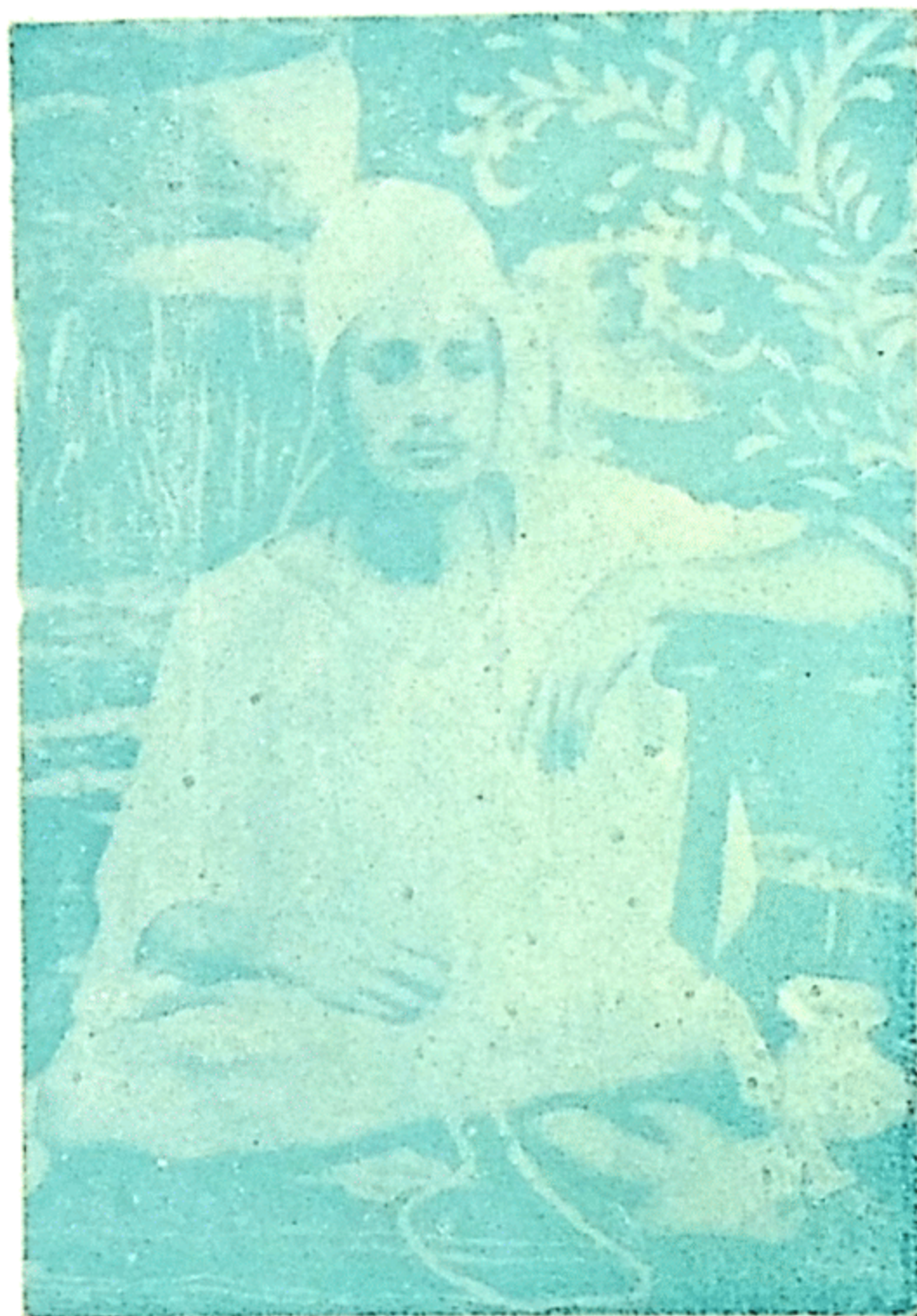
अर्द्धनारीश्वर भेद्रम्
सर्वसिद्धि प्रदायकम्



महात्म्य

ऐतिहासिक गुरद्वारा
श्री गुरु नानक देव जी
श्री हरि हर घाट
बाबा मनीकरण

यह पावन रूप भी संत बाबा जी का



देखो : आप की उभरती जवानी पर हरी
नामु के रंगु रसु का सखर ॥

नोट : पता चला है कि कई गलत लोगों द्वारा गुरुद्वारा मनीकरण के नाम में रसीदें छपवा कर पैसे और रणद संगतों से हकट्ठा करते हैं। कई लोग अपने आप को मनीकरण का कथा वाचक या रागी बता कर संगतों को गुमराह करते हैं। आप जी की सेवा में निवेदन है कि अगर आप ने पैसे भेजने हों तो बैंक ड्राफ्ट या मनीआर्डर गुरुद्वारा साहिब के पते पर भेजे।

इक आंकार सतिगुर प्रसादि ॥

हरि ओम् तत सत ॥

प्राचीन तथा महान तपो स्थान तीर्थ राज मनीकरण
का

महात्स्य तथा इतिहास

मनीकरण प्राचीन समय का महान् तीर्थराज है इसे ब्रह्मांड पुराण में सब से उत्तम कुलांत पीठ में स्थित श्रेष्ठ कहा गया है। यहां प्रकृति के सुन्दर चारों ओर एकांत शान्तिमय रमणीय वातावरण में परमार्थ के ऊँचे, स्वच्छ तथा सघन रहस्य छिपे हुए हैं।

ब्रह्मांड पुराण में इस तीर्थ का नाम वेद ने हरि हर कहा है जल विष्णु है, अग्नि शंकर है सायुज्य मुक्ति को देने वाला यह स्थान है।

। तपतीरे मनीकरण के हरि हरो सायुज्य मुक्ति प्रदी ।

इस का दूसरा नाम अर्द्धनारीश्वर है :

अर्द्धनारीश्वरं क्षेत्रम् सर्वसिद्धि प्रदाकयम् ।

यहां भगवान् शंकर ने पार्वती के साथ ग्यारह सहस्र वर्ष निवास करके तप किया है। इस तीर्थ का तीसरा नाम चिन्तामणि है, भणि में अग्नि है तथा अग्नि में मणि हैं। यह मानवी मन की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाला स्थान है। सवेरे उठते समय, स्थान करने की इच्छा को पूर्ण करने हेतु सरोवर में गर्म पानी तैयार होता है। गर्म चम्पे के पानी में बनी हुई चाय केवल आधा भिट्ठा डालकर ही बहुत स्वादिष्ट बन जाती है। फिर रोटी खाने की इच्छा होती है। रोटी केवल आधे घण्टे में तैयार हो जाती है। इस में आलू, मांह, मोठी, मूंगो साबत, खीर, मोठे चावल प्राकृतिक ढंग से कम समय में भाप से पक्क कर अति स्वादिष्ट भोजन तैयार हो जाता है। सहस्रों की गिनती में पहुंचे यात्रियों के भोजन की सुविधा कम समय में प्राप्त हो जाती है, जिस से मनुष्य को भोजन के साथ मानसिक तृप्ति भी मिलती है।

महादेव तथा पार्वती की कथा का वर्णन इस प्रकार है । यहां पर पार्वती जी का क्रीड़ा स्थल था । उन्हीं के पास चिन्तामणि थी, भगवान् शंकर के पास कल्प वृक्ष था और कामधेनु ऋषियों को अधिकार प्रति मिलती है । मन की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य इन वस्तुओं में है । एक दिन स्नान करते हुए पार्वती जी की चिन्तामणि गिर पड़ी जो सीधे पाताल में शेषनाग जी के पास पहुंची । इस के अधिकारी या तो भगवान् शंकर थे या शेषनाग थे । पहले भक्त भगवान् शंकर हैं, उनकी राशि मंगल है तथा समस्त साज अमंगल है :

नाम प्रताप शंभू अविनाशी
साज अमंगल मंगल राशि

भगवान् मसान में भी बैठ जायें तो शहर बन जाते हैं ।

तीन लोक बसती में बसावें
आप बसें बराने में ।
प्रथम वेद ब्रह्म को दीए,
बने वेद के हितकारी ।
विष्णु को दीना चक्र सुदर्शन,
लक्ष्मी सी सुन्दर नारी ।
कामधेनु इंदर को दे दी,
अहिरावत से बलकारी ।
कुबेर भगत को कर दिया तुमने,
सब वस्तु का भंडारी ।
अपने पास पात्र नहीं रखते,
रखते स्वर्णर दोऊ कर में ।
ऐसे दीन दिग्नाल विघाता,
कउड़ी नहीं रखते घर में ।
अमृत सब देवताओं को दीआ,
आप हलाहल पान किया ।
ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसी को,
जिसने तुमरा ध्यान किया ।
भागीरथ को गंगा दीनी,
सब जग ने इस्नान किया ।

बड़ बड़ पापाआं का प्रभु जी,
 पल भर में कल्याण किया ।
 आप नशे में घूर रहें,
 पीएं भंग नित खप्पर में ।
 अपने पास पातर नहीं रखते,
 रखते खप्पर दोऊ कर में ।

ऐसे दीन दिआल विधाता,
 कउड़ी नहीं रखते घर में ।
 गढ़ लंका राबन को दीनी,
 बीस भुजां दस सीस दीए ।
 श्री राम को धनुष बाण दीने,
 तैने तो जगदीश दिए ।

मनमोहन को मोहनी दे दी,
 मोर मुकट से सीस दिए ।
 भुक्ति हेति कांशी में वासा,
 भगतों को विश्वास दिया ।
 अपने पास पातर नहीं रखते,
 रखते खप्पर दोऊ कर में ।

ऐसे दीन दिआल विधाता,
 कउड़ी नहीं रखते घर में ।
 मुनी नारद को वीना दीनी,
 गंधर्वां को राग दिया ।
 करम कांड ब्राह्मण को दीना,
 सनिआसी को त्याग दिया ।

जिस पर तुमरी हो गई किरपा,
 तिस पर सैं अनुराग किया ।
 जिस ने माइआ, तिस ने पाइआ,
 महादेव तेरे दर में ।
 अपने पास पातर नहीं रखते,
 रखते खप्पर दोऊ कर में ।

ऐसे दीन दयाल विधाता,

कउड़ी नहीं रखते घर में ।

दूसरे भक्त शेषनाग जी हैं । यह अपनी सहस्र जीभों से नामी के नये नये नाम बना कर श्वास श्वास सिमरन करते हैं । जो नाम एक बार उचारते हैं वह दूसरी बार नहीं लेते ।

इस तरह भगवान् शंकर ने गणों को आज्ञा दी मणि की तलाश करो । परन्तु मणि प्राप्त न हुई, इस पर महादेव का क्रुद्ध हो कर अपना तृतीय नेत्र—महां प्रलय अग्नि-नेत्र खोलने लगे जिम से सारी पृथ्वी कम्पायमान हो गई । भगवान् शंकर के नेत्रों से नैनां देवी प्रगट हुई इसी लिए मनीकरण नैनां देवी का जन्म स्याम हैं । पाताल में शेषनाग सोचने लगे कि त्रिलोकीनाथ क्रोध कर रहे हैं क्या कारण ? अभी प्रलय का समय तो हुआ नहीं, फिर विचार किया कि मणि का कारण है ? नैनां देवी ने शेषनाग जी को जा कर कहा अगर तेरे पास मणि है तो दे दे, नहीं तो भगवान् क्रुद्ध होंगे ।

शेषनाग जी ने ऊर्ध्व धार अथवा फुहारे द्वारा मणि भेंट कर दी । इस कारण इसका नाम मनीकरण पड़ा । यहां तक ही नहीं बल्कि भगवान् शिव को प्रसन्न करने के लिये उन्होंने अनेकों मणियां भेजनी आरम्भ कर दी । यह देख कर भगवान् शंकर ने पार्वती को कहा कि अपनी मणि को पहचान लो तथा शेष मणियों की श्राप दिया—अगर रहता हो तो पत्थर रूप में रहें ताकि कलियुग में जीव आकर विक्षेप्ता न करें यह मेरा स्थान सतयुग में प्रगट होगा ।

यह बड़ा शक्तिशाली तीर्थ है, इसकी प्रशंसा महान् तथा असीम है । भगवान् शिव बार-बार कहते हैं :

सत्यं सत्य पुनः सत्यं मापस्यक निरूपितम् ॥

ऊर्ध्व धारादि कुंडे मापोनाधिके भुवी पावनम् ॥

महादेव जी मनीकरण क्षेत्र में बहुत प्रसन्न हैं । उन को इस स्थान से इतना प्यार था कि काशी में मनीकरण घाट बनवाया ।

यह समस्त इलाका गर्म है । यहां से नीचे सात मील से पार्वती के किनारे-किनारे गर्म पानी के चश्में हैं तथा यहां से सोलह मील तक यही

चश्में साथ साथ चलते हैं । मनीकरण गर्म पानी तथा पहाड़ आश्चर्य से भरपूर है, इस में सोना, चांदी, अबरक, काला तथा सफेद बिलोर को खानें है, हीरा, नीचम भी मिलता है । आधुनिक वैज्ञानिक खोज ने जरी के पास यूरेनियम को प्राप्त किया है तथा एक जर्मनी विज्ञानी के अनुसार मनीकरण के गर्म चश्में में रेडियम मौजूद है क्योंकि इस का पाई उबल रहा है । सल्फर या गंधक हो तो पानों केवल गर्म हो सकता है, उबल नहीं सकता अतः यह बिना किसी खार या और मिलावट के शुद्ध स्वच्छ तथा निर्मल न केवल पीने के लिए स्वादिष्ट है बल्कि इस में बिमारियों का नाश करने वाले सेहत की रक्षा हेतु कई गुणों से भरपूर लाभकारी तत्व मौजूद है । इसी को रेडीरम कह दो या शंकर का तीसरा नेत्र कह दो, चाहे चिन्तामणी कह दो, केवल नाम का भेद है, वस्तु एक ही है ।

यहां पर खड़े हो कर ऊपर की ओर दृष्टि लगायें तो पहाड़ की चोटिया दिखाई देती है, इस को हरिन्द्र पर्वत कहते हैं इस के ऊपर ब्रह्म सरोवर है जहां ब्रह्मा जी ने तप किया था । ब्रह्म गंगा इसी ब्रह्म सरोवर से निकल कर आधे मील पर आकर पार्वती से मिल जाती है । यहां से अढ़ाई मील पर रुप गंगा है, रु नाम चांदी का है । इस जगह गर्म जल का चश्मा तथा चांदी की खान है । यहां से आगे चार मील तक चश्में ही चश्में है । मनीकरण से बारह मील पर रुद्र नाग का शीतल चश्मा है जिस का जल नाग के फन के रूप में निकलता है । यह पवित्र स्थान है तथा कुल्लू इलाके के समस्त देवते यात्रा तथा स्नान करने हेतु आते हैं । यहां तक मनुष्य आवादी है, आगे नहीं । बल्कि प्रकृति अपने नये रूप में दृष्टिगोचर होती है ।

रुद्र नाग से चार मील दूर खीर गंगा हैं, इस की ऊंचाई साढ़े दस हजार फुट है । यह स्थान भी गर्म पानी से सुमज्जित है, इस की कथा अद्भुत है । खीर गंगा के नाम पीछे ऋषियों, मुनीश्वरों के अलौकिक जीवन की झलक दिखाई देती है । पुरातन काल में यहां पर खीर या दूध बहता था जो ऋषि महंश्रुषि पी कर निर्वाह करते थे । इस अनोखी धरती पर पहले शंकर पार्वती तथा फिर सप्त ऋषियों ने तपस्या की, यहां संत कुमार के बाद में इन्हीं के अवतार स्वामी कार्तिक जी ने भी

तप किया था । एक बार संत कुमार समाधी में लीन थे । वहाँ से शँकर और पार्वती जी गुजरे, उन्होंने आगे उठ कर शँकर भगवान् को प्रणाम न किया । पार्वती जी को क्रोध आया तथा कहा कि त्रिलोकी नाथ हैं और तुम ने नकस्कार नहीं की । भगवान् कहने लगे कि इस में कोई अंतर नहीं । यह हृदय में भी मेरे ध्यान में स्थित है और बाहर भी मैं हूँ । परन्तु पार्वती ने फिर भी अपमान मान कर संत कुमार को शूद्र हो जाने का श्राप दे दिया । उनकी समाधी खुल गई और तथास्तु कह कर स्वीकार कर लिया । संत कुमार नित्य क्रिया को निपटाने के पश्चात् फिर समाधी में लीन हो जाया करने थे ।

कुछ समय पश्चात् पार्वती जी को पश्चात्ताप हुआ । उन्होंने आकर कहा "वर मांगो," । संत कुमार का उत्तर था कि वैसे तो मैं सुखी हूँ परन्तु माता ! अगर आप प्रसन्न होकर वर देना चाहते हैं तो मुझे ऐसा शरीर दे दो जिस में टट्टी येशाब बैठे ही हो जाये और नफ़रत न हो । पार्वती जी फिर गुस्से में आए और बोली ऐसे तो ऊँठ हुआ करते हैं और फिर श्राप दे दिया । संत कुमार ऊँठ के रूप में बहुत सतुष्ट रहने लगे । उन के अन्दर ज्ञान अवस्था का नाश तो हो नहीं सकता था । वह हरे हरे पतं खा कर फिर समाधी में लीन हो जाते थे । कुछ समय पश्चात् फिर पार्वती जी ने आकर कहा कि "वर मांगों" संत कुमार वैसे अडोल थे, बोले जब तक मेरी प्रारब्ध है, मेरा यही शरीर बना रहे । माता पार्वती अपने चित्त में अनोखे प्रभाव से झुम कर बोलें, आप तो निर्वासि हो, कुछ मांगना नहीं चाहते, आप मुझे वर दो । उन्होंने पूछा, "माता ! मांगो क्या चाहते हैं" पार्वती जी ने इच्छा प्रगट की—मेरे उदर से जन्म लो, इस-तरह सत कुमार स्वामी कार्तिक होकर पार्वती जी के घर जन्मे । इनके लिए खीर या दूध की गंगा निकाली गई थी ।

त्रेता युग में यहाँ पर परसराय जी हुए । इस के पिता ऋषि जमदघन का सहस्र बाहु राजे ने सिर काट विना था क्योंकि परस राम जी के पास कामधेनु थी जो उन्होंने सहस्र बाहु राजे को देने से इन्कार कर दी थी । इस लिए परस राम ने विचार किया कि कलयुगी जीव कलेश या विक्षेप्ता न करे, खीर गंगा को तीन युग प्रति जल बन जाने

का आप दिया तथा कहा शतयुग में फिर खीर या दूध की गंगा बनना है। इस के जल में मलाई और मक्खन जैसी चिकनाई है जिस में स्नान करना बहुत सुखदायी है। यहां चारों ओर प्राकृतिक सौंदर्य का मनमोहक दृश्य है। भोज पत्तों के बनों से सुसज्जित यह स्थान अखरोट, जंगली बादाम, गुच्छी, डोंगरी, वनकशा, जंगली गोभी, जंगली जामन की उपज से मालामाल है और कई प्रकार की जड़ी बूटियों से भरपूर जंगल है। स्वाभाविक है कि ब्रह्म ज्ञान तथा महज आनन्द के अभिलाषी खोजी जिज्ञासू रुहानी खजाने की तलाश में इधर खींचे जाते हैं। परमेश्वर की कुदरत की अपार लीला है। गुरु नानक साहिब जी का कथन रसना पर आ जाता है—, 'बलिहारी कुदरति बसिष्ठा तेरा अत न जाई लखिआ,' खीर गंगा से दस मील आगे भीमसेन का बनाया हुआ पांडव पुल है। यहां पांडवों ने खेती की है, अब तक यहां जंगली चावलों के खेत मौजूद हैं तथा और चौबीस मील के फासले पर चक्रवर्ती राजा मानघाता के मान तुलाई और मानसरोवर बनाए हुए हैं। यह भू-मंडल के आभूषण है :—

मानघाता सो महीपति अलंकार भूतोगत ।

इन्होंने, दूसरा सूर्य बनाया था जो सारी पृथ्वी को परिक्रमा करता था। इस से मानघाता ने अपने राज्य में रात्रि के समय भी कर्भ! अन्धेरा नहीं होने दिया था।

पश्चात् कलियुग में श्री गुरु नानक साहिब जी ने अवतार धारा :

कलि तारन गुरु नानक आया ।

(भाई गुरदास जी)

सच्चे पातशाह पारब्रह्म स्वरूप सतिगुरु नानक देव जी के सांसारिक जीवों का उद्धार करने हेतु उदासी करते हुए मनीकरण पहुंचे। सच्चे साहिबां के पवित्र चरन स्पर्श से यह धरती और अधिक महान् बन गई। गुरु साहिब के साथ बाला, मरदाना थे।

यहां पर पहुंचने से पूर्व अन्तर्यामी सतिगुरु नानक देव जी भीतर की धरती पर वहां के निवासियों का कल्याण करने के लिए

शहर का रमणीक वादो में कुछ समय ठहरे थे । इस का प्रमाण भाई बाले वाली जन्मसाखी के पृष्ठ 485 पर भुटंतर देश के राजे साथ साखी के शीर्षक नीचे मिलता है । गुरु साहिब का महान संतोषी रूप में पहुंचना सुनकर भुटंतर निवासी दर्शन करने के लिए पहुंचने लगे । वहां के राजे ने भी चर्चा सुनी तो उन्होंने भी कई पदार्थों की भेटा लेकर गुरु साहिब को आकर नमस्कार की । गुरु बावे की आज्ञा पाकर राजा ने वह समस्त पदार्थ वस्तुएं परमेश्वर के नाम पत गरीबों में बांट दी, पश्चात् राजे ने प्रार्थना की, हे सच्चे गुरु जी यहां पर पशम और चावल के अतिरिक्त और कोई अनाज पैदा नहीं होता । गुरु साहिब ने राजे से अनाज मंगवा कर सारी जगह उस का छौंटा दे दिया तथा वर हुआ कि इस घरती पर भरपूर अनाज होगा, सोना, चांदी की खानों से इलाके की अमीरी बढ़ेगी । इस प्रकार राजा और प्रजा बहुत प्रसन्न हुये ।

मनीकरण स्थान को साहिब के चरण स्पर्श को प्राप्ति सम्बन्धी ज्ञान सिंह जी द्वारा लिखी जन्मसाखी के पृष्ठ 165 पर इन शब्दों द्वारा वर्णन है ।

तबरीख गुरु खालसा पृष्ठ 165 :—

श्री गुरु नानक साहिब जी ने 15 अमू (आश्विन), 1574 विक्रमी को भाई दाले मरदाने को संग लेकर उत्तर खड के सैल करने का आरम्भ किया । गुरु जी कलानौर, गुरदासपुर, दसूहे के बीच में चलते हुए त्रिजोकीनाथ, पालनपुर, गुरेड़न, कागड़े होते हुए जवालामुखी देवी के मंदिर पास जा पहुंचे । जहां पर अब गोरख टीले से ऊपर धर्मशाला है । यहां पर अर्जुन नागा तप करता था, इस को ज्ञान का प्रकाश देकर बाबा जी ने कल्याण किया । यहां में चल कर मंडी वाले राजा को सच्चे प्रभु की भक्ति में लाया और आप खालसर पहुंच गये । यहां पर छोटे बड़े सात टीले पत्थर के, क्षीज में तैरने फिरते देख कर, कुदरत करतार को देखते हुए चम्वे की सैल करके कुल्लू के राज्य में विजली महादेव जा कर देखा । इस पहाड़ पर अनेकों लोगों को ज्ञान का प्रकाश देकर बाबा जी ने मुक्त किया, फिर ब्रह्म कोठी से होते हुए मनीकरण तार्थ पर जा बिराजे । वहां की आश्चर्यजनक लीला देख कर खीर गंगा

नदी की झांकी लेकर व्यास नदी के पार देव की ओर ऊपर पहुंचे । दूण पहलुद को देखते हुए कीरतपुर के पास जा बैठे ।”

उपरोक्त साखी से सतिगुरु का मनीकरण स्थान पर पहुंचना तथा उस के इर्द गिर्द इलाके का उद्धार करना स्पष्ट है । इस तरह भाई बाले की जन्मसाखी में पृष्ठ 516 पर निम्न अनुसार वृत्तांत अंकित किया गया है :—

श्री गुरु नानक देव जी जीवों का उद्धार करते हुए मनीकरण पहुंचे तो मरदाने ने कहा हे सतिगुरु जी अगर आज्ञा करो तो इस घरती में से आहार लेकर आऊँ तो गुरु जी ने कहा, अच्छा भाई तेरी इच्छा । यह सुन कर मरदाना उठ कर उस गांव में जा पहुंचा । उन लोगों ने मरदाने को रसद दी । गुरु जी ने कहा मरदानियां ! श्री बाहिगुरु कह कर यहां से पत्थर उठा । जब मरदाने ने वहां से पत्थर उठाया तब उसे पत्थर के नीचे से बड़ा कुदरत का गर्म कुँड निकल आया । वचन हुआ इस कुँड में रोटियां बना कर डाल दें तथा और अनाज है तो कपड़े में बांध कर डाल दे परन्तु बाहिगुरु कह कर । जब मरदाने ने गुरु जी का वचन सुना उसी समय रोटियां बना कर मरदाने ने उस गर्म कुँड में डाल दीं तथा और अनाज कपड़े में बांध कर डाल दिया ।

जब मरदाने ने रोटियां अनाज डालीं सभी कुछ ही डूब गया तो मरदाने ने कहा हे गुरु जी यह तो अनाज हमारा वैसे ही गया तो गुरु नानक जी ने वचन किया—मरदानियां तू बाहिगुरु कह कर कहो—सच्चे पातिशाह जी अगर हमारा अनाज निकल आए तो मैं एक रोटि तेरे नाम की दूँगा । जब मरदाने ने यह प्रार्थना की तो रोटियां तथा समस्त अनाज पक्क कर ऊपर आ गया—तो गुरु जी ने कहा—सुन मरदानियां इस तरह जो मनुष्य श्री परमेश्वर जी के नाम से देता है तो उसी का डूबा हुआ निकल आये—यह सुन कर मरदाना श्री गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा और कहने लगा कृपा निधान जी, आप धन्य हो जी । तो यह बात सारे शहर (गांव) में सुनी गई—भाई यह फकीर तो कोई परमेश्वर का प्यारा है । यह तो कोई महापुरुष बड़ा कलावान है । फिर इस देश के राजे ने सुना बजीर मसद्वी तथा राज्य के लोग साथ लेकर आये । सभी ने श्री गुरु नानक देव जी के चरण स्पर्श किये

गुरु नानक देव जी ने वचन किया है परमेश्वर के लोगो ।

वासुदेव सर्वत्र मैं ऊन न कहहु ठाढ़ ॥
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ॥

गुरु इतिहास में वर्णन आता है कि साहिब श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज पांच प्यारियों को साथ लेकर मनीकरण के दर्शन करने के लिए रियासत मंडी से पहुंचे थे ।

उपरोक्त दोनों साखियां इस बात की साक्षी भरती है कि गुरु महाराज ने अपने चरन स्पर्श से इस धरती को पवित्र किया । सतिगुरु द्वारा प्रगटायी वह गर्म चश्मा अभी तक उसी तरह चल रहा है और उस में परसादे पकते हैं ।

हसन अबदाल की पंजा साहिब (पाकिस्तान) की साखी तो समस्त जगत् में प्रसिद्ध है । वहां सतिगुरु जी ने मरदाने से एक पत्थर उठवा कर शीतल जल का चश्मा प्रगट किया । वली कंधारी की ओर फैंके पर्वत को अपने पंजे से रोक कर वली का घुमड़ तोड़ा । शीतल जल का चश्मा आज भी चलता है पंजा आज भी मौजूद है, परन्तु हम उस स्थान के खूले आम दर्शन दीदार नहीं कर सकते । पाकिस्तान पासपोर्ट लेकर जाना पड़ता है परन्तु मनीकरण कुल्लू का यह स्थान जहां सतिगुरु जी ने मरदाने से पत्थर उठवा कर गर्म जल का कुँड प्रगट किया, हमारे देश में है और इतने मोनमोहने प्राकृतिक वातावरण में है कि दर्शन करके तन मन प्रसन्न हो जाता है तथा स्वयं मुख से निकलता है :—

“धन नानक तेरी बड़ी कमाई”

गुरु नानक परम जोती सरूप ।
कलू काल पापं भई भूप भारी ।
राऊ रूप धारी हरि पै पुकारी ।
तभी देहधारी मुरारी अनूपं, गुरु नानक परम जोती सरूप ।
सो कालू पिता धामं लीनो अवतारो ।
सभी जीव को आप दीनो उधारो ।
महा तेज छाजै करे कौन उपारं, गुरु नानक परम जोती सरूप

१. त्रै लोक नाथ महा तेज धारी ।
 भगता रखिये हेत प्रगट मुरारी ।
 सदा सच्च चेतन आनंद रूपं, गुरु नानक परम जोती सरूपं ।
 महा ध्यान रूप सदा सति सीले ।
 रहे मस्त होइ हो परम प्रवीने ।
 भइओ है प्रकाश मिटे अंध कूपं, गुरु नानक परम जोती सरूपं ।
 गुरु ग्रन्थ साहिब को हैं उचारं ।
 कई जीव जंत भए सिधु पारं ।
 पढ़े जो सुणे प्रेम कर अनूपं, गुरु नानक परम जोती सरूपं ।
 जिनि दरस पाइओ तिनि सोहि पाइओ ।
 नहीं फेर आइओ प्रभु में समाइओ ।
 नहीं चाह कोई सदा सति रूपं, गुरु नानक परम जोती सरूपं ।
 लगी नाम डोरी नहीं सुध होरी ।
 सदा ही समाधी विखे बिरती जोरी ।
 रहे मस्त होइ परमात्मा सरूपं, गुरु नानक परम जोती सरूपं ।
 पढ़ियो अष्टक जासना छित लाई ।
 टूटे सरन बंधन महा भोख पाई ।
 सदा हो वसें चरन गुरु के समीपं, गुरु नानक परम जोती सरूपं ।

प्राचीन शास्त्रों अनुसार कहते हैं कि इस स्थान के स्नान को अटसठि तीर्थों के स्नान का महात्म्य है। ऐसी अगम्य और प्रेम भरी लहर उठती है जो पापी जीवों को भी सत्य संतोषा दायरे में ले जाती है।

जन परउपकारी आए ॥

जीश दान दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥

संत बाबा नारायण हरि जी, जो अपनी पूर्ण आयु महान् प्रतापी, तेजस्वी, तपस्वी, कर्मयोगी, आत्मखोजी परवात्मा रूप हो कर पूर्ण ब्रह्म ज्ञान की जीपन-मुक्तावस्था श्रेष्ठ सहज आनंद को प्राप्त करने के पश्चात् 22 फरवरी, 1989 का दिवस बुधवार भीनी रात्रि के प्रभात-काल मनीकरण साहिब के सन्त-सरोवर में परमा नन्द ब्रह्म की परमज्योति में लीन हो

गये थे कलियुग के घोर अन्धकार में सत्युग का प्रकाश करने वाले अनमोल ईश्वरीय महापुरुष रत्नों में से एक थे ।

अनुभवी महापुरुष सदैव यही सत्य बताते हैं अकालपुरुष पारमात्मा स्वयं समय समय ऊँची एवं पावन सत्य स्वरूप पवित्र आत्माओं को अपनी अलौकिक दैवी शक्तियाँ सहित पूर्ण करके पैगंबरों गुरु अवतारों पीरों फकीरों तथा साधू संनजनों का स्वरूप देकर मातृ लोक के जीवों का कल्याण करने के लिए इस संसार में भेजता है । ये अपने जीवनकाल में सतिगुरु का जाप तथा प्राणी-मात्र की सेवा की चमत्कारपूर्ण लीलामय मेहनत द्वारा धर्म का ऐसा प्रकाश उत्पन्न करते हैं कि अज्ञानता तथा मोह-माया के अन्धेरे में भटके हुए संसारी लोगों को ज्ञान मार्ग तथा ठीक मंजिल की समझ आपानी से हो सकती है ।

इसी प्रकार ऐसे एक पूर्ण ब्रह्म व्यक्तित्व संत बाबा नारायण हरि जी का जन्म जिला कैमलपुर (पाकिस्तान में) का तहसील फतहि जंग, गांव हतार के प्रतिष्ठित भाई जवाला गाह जी के गृह भाग्यवान् माता लाजवंती जी के उदर से सन 1909 में हुआ, माता पिता ने नाम नारायण सिंह रखा जो बाद में नारायण हरि के नाम से आप की पहचान प्रसिद्ध हुई । ये दैवी नूर जुले में खेलता ही था कि एक दिन रमते साधू ने संत बाबा जी के मासुम बाल-मुख को ध्यान से देख कर वचन किया । बब बच्चा भाग्य वाला है यह या तो राजा बनेगा अथवा साधू । संत बाबा जी ने अपने पूर्ण जन्मों के पूण्य कर्म तथा शिरोमणि संस्कारों 6 फलस्वरूप अपने लिए साधू मार्ग निश्चित किया और बचपन से ही दृढ़ निष्ठा के साथ कठिन तपस्या आरम्भ की । संत बाबा जी बहुत अमीर घराने का इकलौता जाडला पुत्र और आप से बड़ी पांच बहनों का लाडला भाई था । बहुत छोटी आयु में यदि दुनियावी माता पिता की चरछाया न रही परन्तु चचा, भाई दीवान चंद जी, चाची सोमावंती जी तथा बूमा के प्यार दुलार और घनिष्ठ स्नेह ने बाबा जी को पाल-पोस कर बड़ा किया । बारह वर्ष की आयु में संत बाबा जी का विवाह रावलपिंडी के अमीर निवासी स. निहाल सिंह की सुशील सुन्दर सुपुत्री वसंत कौर के साथ बड़ी खुशियों के साथ हुआ, परन्तु परमेश्वर के नाम की लगन साथ जुड़े हुए बाबा जी के हृदय तथा विरक्त वैरागी मन को घर-परिवार के मीठे मोह के रेशमी छागे में बांध कर न रख सके । आप सभी कुछ का त्याग करके सत्य की खोज में चल पड़े ।

संत बाबा जी छोटी बालवस्था में ही रात्रि को शमशानी में जा कर बैठ जाते, खाने-पानी तथा शरीरिक सुखों का त्याग करके मन तथा चित्त-वृत्तियों

को एकाग्र करने का अभ्यास करते थे इसी तरह आप जी को मानसिक स्थिरता तथा स्थिर अवस्था निरंतर दृढ़ होती गई। वह समय भी शीघ्र आ गया जब आप ने एक लोई ली और तीर्थों की पैदल यात्रा करने के लिए घर से मोन चल पड़े। अमृतसर श्री दरबार साहिब की परिक्रमा में कुछ समय बैठ कर यहीं से गुरुद्वारों की सेवा आरम्भ की। यहां से श्री हजूर साहिब पहुंचे, वहां सच्ची श्रद्धा सहित अमृतपान किया। अबचल नगर के पावन धर्म स्थान की सेवा तथा सत्संग द्वारा नाम-योग और प्रेमा-भक्ति की तपस्या में स्वयं पूर्णतः लीन हो गये। वहां आप कुछ समय रहकर विभिन्न कोतुक देखते हुए तथा सैर करते हुए फिर पंजाब की घरती आनन्दपुर साहिब में आ गये।

यहीं आनन्दपुर का आनन्दमय स्थान था जहां माता बसंत कीर के पिता और अन्य सगे सम्बन्धियों की विनती और पुकार को स्वीकार करते हुए संत बाबा जी ने त्यागी माता जी को अपने साथ योग-समाधी प्राप्त करने की आज्ञा दी। यहां प्रकृति के रमणीक चारों ओर 'गुरु के लाहौर' में संत बाबा जी ने बहुत समय तक संगतों की सेवा के लिए लंगर की कई देगें अर्पित की और कथा कीर्तन किये।

अकाल पुरुष परमात्मा के हुक्म में बाबा जी के लिए अभी अन्य उद्देश्य निश्चित किये हुए थे जो आप ने बाबा मनीकरण हरि हर घाट पर पहुंच कर पूर्ण करने थे। इस लिए आप ने संत माता जी सहित गुरु के लाहौर से भुतंर के लिए रवाना हो गये, भीम पहाड़ी मार्गों पर पैदल चलते हुए मंडी पहुंचे। उस के पश्चात् भुतंर आ कर कुछ समय चलीहे किये, पञ्ज भंडारे लगा कर सेवा त्याग के वे चमत्कारपूर्ण दृश्य दिखाये कि वहां के निवासी आश्चर्य में पड़ गये। संत बाबा जी ने अपनी मंजिल पर पहुंचना था इसी ईश्वरीय आदेश की पालना करने के लिए दोनों संन्यासी जीवों ने पुनः पारवती नदी किनारे चलना आरम्भ कर दिया। अन्त खीर गंगा के बरफानी पहाड़ों की चोटी पर पहुंच गये। इस स्थान पर स्वयं बाबा जी और उन्हीं की आज्ञाकारी सुपत्नी त्यागी माता जी के लिए अधिक कठिन तपस्या की टकसाल में बनने का था। यहां इन दोनों संत महानुभावों को आत्मिक मानसिक कमल-विकास तथा शुद्ध कंचन रूप प्राप्त हुआ। आप ने आने वाले भविष्य के लिए परिपूर्ण हो कर बाबा मनीकरण में भाग लगाये।

भगवान् शिव जी के तपो खण्ड का यह पावन भाग हरि हरि

घाट या यहां संत बाबा जी ने अपने जीवन का दीर्घ समय व्यतीत किया, आप की सौन सुनहरी जगमगाती आत्मा के प्रत्यक्ष दर्शन करके यह समूची घरती सुन्दर तथा शोभनीय बन कर भरपूर बनने लग पड़ी और संत बाबा जी के महान पावन चरणों के स्पर्श का सुभाग आधी शताब्दी तक प्राप्त करती रही है।

इस काल में बाबा जी ने अपने हाथों सेवा साधना से एक महान् तीर्थ और श्री गुरु नानक देव जी के पावन धर्म स्थान की स्थापना कर दी। संत बाबा जी के व्यक्तित्व और चरित्र में ईश्वरीय गुणों का प्रकाश तो हो ही गया था, आप गुरुमति का साक्षात् वास्तविक रूप थे। आप परम सत्य, आदि धर्म, ब्रह्मज्ञानी, मानव ऐकता, पूर्ण प्रेम, अहिंसा, समदर्श, दया, क्षमा, गरीबी, सहनशीलता, प्राणीमात्र की रक्षा, सहायता तथा सेवा का समूचा रूप थे। इसी प्रकार संत माता जी की सेवा और जपु समाधी की मूर्त थे। आप दोनों शरणागतों और अभ्यागतों की हर समय तन, मन, लंगर आदि की सेवा करने के लिए तत्पर रहते थे।

संत बाबा जी ने यहीं ही आकाशवाणी श्रवण की, आज्ञा परमेश्वर की ओर से हुई तो आप ने भववान् शिव के सस्र वर्ष पुरातन तपोस्थान पर 'कार-सेवा' करके शिव जी महाराज का मन्दिर बना कर स्थापना की। श्री गुरु नानक देव जी के अवतारी चरणों का स्पर्श प्राप्त करके पवित्र पत्थर को प्रगट किया, और ईश्वर रूप गुरु बाबा नानक को ऐतिहासिक याद के चिन्ह रूप गुरुद्वारा साहेब की नींव रख के जागती ज्योति शब्द गुरु ब्रह्म श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश किया : संत बाबा जी ने तो समझो उस समय की शमशान भूमि के तल पर सचखंड के निमाण का कायं। पर पर ले लिया था जो बाबा जी के ईश्वरीय विश्वास के साथ पूरा हुआ गया। इस समय कई मजला आलीशान गुरुद्वारा, स्नान के लिए आसानी से प्राप्त गर्म जल, सरोवर, झीलें, लंगर का रमणीय हाल, शान्त सुखमय विश्राम घर के कमरे, सतपुरा, ऋषि कुटायल और नारायणपुरी का रचना देख कर मनुष्य की आंखें अगम्य प्रकृति के सौंदर्य के दर्शन करके प्रसन्न हो जाती हैं। यदि बाबा जी ने सगतों की शरीरक-भूख की संतुष्टि के लिए आठों पहर सात्विक भोजन लंगर का प्रवन्ध पक्का किया है वहां महान् परोपकारी बाबा जी ने मानव के आध्यात्मिक कल्याण और सत्य और पवित्र संसारी जीवन यापन विताने के लिए परम धर्म का प्रकाश ऊंचा किया है, क्योंकि आप प्रभु की दरगाह से एक मिशन लेकर आये थे, उस को ठीक ठाक अर्थों में पूर्ण करने के गुरुबाणी का रहस्यमयी कथन

प्रकट किया :—

वासदेव सर्वत्र महि ऊन न कतहू ठाढ़ ।

अंतर बाहरि संग है नानक क ई दुराढ़ ॥

परन्तु इतिहास गवाह है कि ऐसे पूर्ण महापुरुषों को भी ऊँचे कार्यों के लिए समय का बुरा करने वाली अधर्मी शक्तियों का सामना करना पड़ता है । संत बाबा जी को भी लम्बा संघर्ष करना पड़ा । झूठे मुकद्दमों की परेशानी उठानी पड़ी । आप को कई प्रकार के कष्ट सहने पड़े परन्तु बाबा जी कर्म के शूरवीर तथा वचनों की पूर्ण परमेस्वर के कार्य की सेवा समाधी मान कर स्थिर तथा अडोल रहे ।

संत बाबा जी का दर्शन बहुत आनंददायक था । आप के देवी मुख पर विकसित हुए सहज मन की महकती प्रसन्नता और निर्मल छवि से सदैव स्वच्छ प्यार का दीदार झलकता रहता था, आप की ब्रह्म दृष्टि ऐसे देखती थी कि वाणी के अनमोल वचन सत्य होते थे :—

सभे सांझीवाल सदाइनि कोऊ न दिसै बाहरा जीओ

और भगवान् श्री कृष्ण जी का ब्रह्मोपदेश ऊँचे कर्म रूप में छलकारे मारता था ।

हे अर्जुन : सभ को मेरे में देख ।

मेरे को सभ में देख ।

संत बाबा जी ने जीवन का यह बहुत बड़ा दृश्य था जो आप ने सभी धर्मों की मूलक एकता दृढ़ करने के लिए मानव जाति को अपने ईष्ट धर्म की पूजा वंदगी की बराबर स्वतन्त्रता का आदर्श किया । आप जी ने कथा कीर्तन सत्संग विचार द्वारा वैकूण्ठ के द्वार खोले हुए थे :

ब्रह्मु दीसै ब्रह्मु सुणीअै ऐकु एकु बलाणीऐ ॥

आतमु पसारा करणेहार प्रभु बिना नहि जाणीऐ ॥

आप जी का समस्त जीवन सत्गुरु तेग बहादुर साहिब जी के शब्द : "जो नरु दुख महि बुखु नहीं माने" और दशम पातशाह श्री गुरु कलगीघर महाराज जी की वाणी : "रे मन ऐसी करि संनिआसा" के दर्शन का सितारों की तरह चहकता अमल का आनंदमय रूप था । सेवा पूज बाबा जी की सच्ची संतुष्टता सदा इसी में रही कि समस्त जीवों को यात्री संगतों को, बिना किसी तरह के भिन्न-भेद अथवा भेक-भाव के सुख विश्वास देने के लिए सम्भव साधन और पूर्ण प्रयत्न हों, अपनी सदैव इच्छा और प्रसन्नता की पूर्ति के लिए आप जी ने दिन रात के अटुट

लगर आरम्भ किये सुन्दर समागम किये, दोनों समय कीर्तन की अमृत वर्षा की। संत बाबा जी को उपस्थिति में जब सत्संग अथवा 'कीर्तन भक्ति का क्रम कई घंटों तक लगातार चलता रहता तो दूर दूर एक तक एक कोने से दूसरे कोने तक परम शक्ति और सत्य, वैराग्य की विराट थटथराहट तथा लहर फैल कर मानवी-मनों को परमेश्वर की ऐक्यता में पिरो देती थी। आप जब मीठे स्वर में 'जिनी मुहबतां लाइयां मुहबतां दिलां दीआ' रथा 'ओम् हरे राम-हरे-श्री राम-राम हरे' की ध्वनि लगाते तो समस्त वातावरण प्रेम और एकता की स्वच्छता से भर कर गूँज उठता था, जब आप निरंकार परमेश्वर की प्रेम पूजा में साकार आरती करते थे तो देवी देवते शंखों साजों का अनहद नाद बजा कर दरवार साहिव के कण कण को संगीतमय बना देते थे, यह दृश्य बहुत मनमोहक तथा आश्चर्य से भरपूर होता था।

संत बाबा जी ने केवल पारवती गंगा के दोनों तटों को मिलाने के लिए ही पुल नहीं बनाया अपितु आप ने मानवी आत्मा तथा परमात्मा का मिलाप करने के लिए धर्म स्थान का सेतु तैयार किया। एच्छुक जीवों को शिक्षा दी कि अहम् का त्याग, परमेश्वर के नाम तथा धर्म श्रद्धा धारण करना अनिवार्य है, शरीर के आहार के लिए सात्विक भोजन पर अधिक बल देते थे, क्योंकि यह आहार अहिंसा, प्यार और दया की उपजाऊ धरती है। संत बाबा जी ने मानव जाति पर उपकार करते हुए अपने जीवन में अनगणित सच्चे सौदे किये तथा अन्त में बहुमूल्य वाणिज्य व्यापार का लाभ प्राप्त करके परमेश्वर की दरगाह का आदेश मिलते ही प्रियतम बाहेगुरु के चरणों में इस तरह पहुँच कर बिराजमान हुए—'जिउ जल महि जलु आइ खटाना, जिउ जोती संगि जोति समाना।' आप जी के शिरोमणि उपदेशों का धारण करने वाले गुरुमुख जीवों को मनीकरण के सत्युगी तीर्थ पर संत नारायण हरि जी द्वारा जागत ज्योति, खुदाई खलकत के प्यार तथा सेवा भावना का ऊँचा संदेश समस्त मंडल के वातावरण में से मीठी रस भिनी ध्वनि में सुनाई देता रहेगा। यहां जिज्ञासु जीवों की अतृप्त आत्माओं को अपनी वास्तविक मंजिल के चिन्ह मिलते रहेंगे।

संत बाबा जी की महिमा अगाध है, इस का कथन व्याख्यान अलख बुद्धि की सीमा से परे है।

साध की महिमा बेद न जानहि ॥

—

...

...

ब्रह्म ज्ञानी की गति ब्रह्म ज्ञानी जानै ॥

संत बाबा जी के ध्यान में अनुरक्त श्रद्धालु के मुखसे तो 'धनम काई', 'धन कमाई' के शब्द निकलते और गुरुवाणी का मान् वाक्य :

आपि मुकतु मुकतु करें ससारु ॥

नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥

होठों पर आ जात है ।

संत बाबा जी की सत्य धर्म की चलाई मर्यादा को आगे चलाने के लिए देवी जी हैं जो आप प्रेम, सेवा, त्याग और तपस्या की साकार मूर्ति हैं, बाबा जी की बड़ी सन्तान सपुत्री हैं, बाबा जी के बताये, दर्शये मार्ग अनन्य श्रद्धालु अनुयायी होने के कारण ऊँची, पवित्र कमाई के मालक और त बाबा जी के योग उत्तराधिकारी बने है और संत पिता के बनाये आदर्शों पर चल कर दिन रात सेवा में मगन है और प्रबन्ध कार्य संत बाबा जी के दामाद बाबा श्री राम जी जो कि संत बाबा जी की छोटी सपुत्री के धीवी हर भजन कौर जी के पति है, संभालते हैं ।

राखे ज्यों प्रभु त्यों खुशी में ही रहना

कबहुं गृहवासी कबहुं बनवासी, कबहुं पूर्ण आसी, कबहुं हो निरासी ।
सभी कर्म को योग से ही सहना ।

राखे ज्यों प्रभु त्यों खुशी में ही रहना । ।

कबहुं मिष्ट पाई, कबहुं शुष्क पाई, कबहुं द्रव्य पाई कबहुं सो गवाई ।

दिले हर्ष कि शोक काहु न लेना । राखे ज्यों प्रभु । २ ।

कबहुं पाव प्यादे चली पंथ जाना, कबहुं वाहन सुविमान समाना ।

कबहुं दान देना कबहुं दान लेना । राखे ज्यों प्रभु । ३ ।

कबहुं श्रेष्ठ भूपाल सन्मान देवे, कबहुं कोप से घर लूटी वो लेवे ।

तऊ राखिये चित में सुख चैना । राखे ज्यों प्रभु । ४ ।

कबहुं है संयोगी, कबहुं है वियोगी, कबहुं हो निरोगी, कबहुं होय रोगी ।

मुखे बोलिये न बनो भारु बैना । राखे ज्यों प्रभु । ५ ।

कबहुं ब्याह ओछन के योग आवे, कब शोक सिधु हुं विधाता बनावे ।

नहीं रोय के डालिये नीर नैना । राखे ज्यों प्रभु । ६ ।

कबहुं आप राजा बनि राज कीज, कबहुं नीच की चाकरी चाहे लीजे

भली कि बुरी यों कुछ नहीं कहना । राखे ज्यों प्रभु । ७ ।

कबहुं हस्तिनी फूलों की माला डाले, कबहुं शस्त्र से आई शत्रु सहारे ।

घरे घोर घोरई घोका रखे न ।

राखे ज्यों प्रभु त्यों खुशी में ही रहना । ८ ।

Sacred Heart Printers, Patiala (Ph: 75457)

श्रीमान् संत बाबा नारायण हरि जी के

अनमोल वचन

दस नियम पालन करने योग्य

१. सच्च बोलना, २. किमी का दिल न दुखाना, ३. चित्त और इन्द्रियों को सुचारु रूप से चलाना, ४. अचार, विहार, आहार ठीक रखना, ५. कुसंगति से बच कर सतिसंग में रहना, ६. काल को हर समय सिर पर देखते रहना जो कुछ प्राप्त हो उसी में प्रसन्न रहना, ७. निर्वाण के लिए प्रयत्न करना परन्तु भरोसा ईश्वर पर रखना, ८. नितनेम में नागा न करना, ९. मैं क्या हूँ जगत क्या है, बंधन और मुक्ति क्या है इस का विचार सदा रखना, १०. अपने कर्मों का हिसाब प्रतिदिन देखने रहना ।

अनमोल मोती

१. लेना चाहते हो तो आर्शीवाद लो २. मारना चाहते हो तो बुरी आदतों को मारो ३. जीतना चाहते हो तो तष्णा को जीतो ४. खाना चाहते हो तो क्रोध को खाओ ५. पीना चाहते हो तो हरि नाम रस का पान करें ६. पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो ७. देना चाहते हो तो विनम्र होकर दें ८. जाना चाहते हो तो तीर्थ स्थान और प्रभु की शरण में जाओ ९. करना चाहते हो तो दुखी जनों की सेवा करो १०. छोड़ना चाहते हो तो पाप को छोड़ो ११. बोलना चाहते हो तो सच्च और मीठे वचन बोलो १२. तोलना चाहते हो तो बात को तोलो १३. सुनना चाहते हो तो ईश्वर की महिमा और दुखी जनों की पुकार सुनो ।

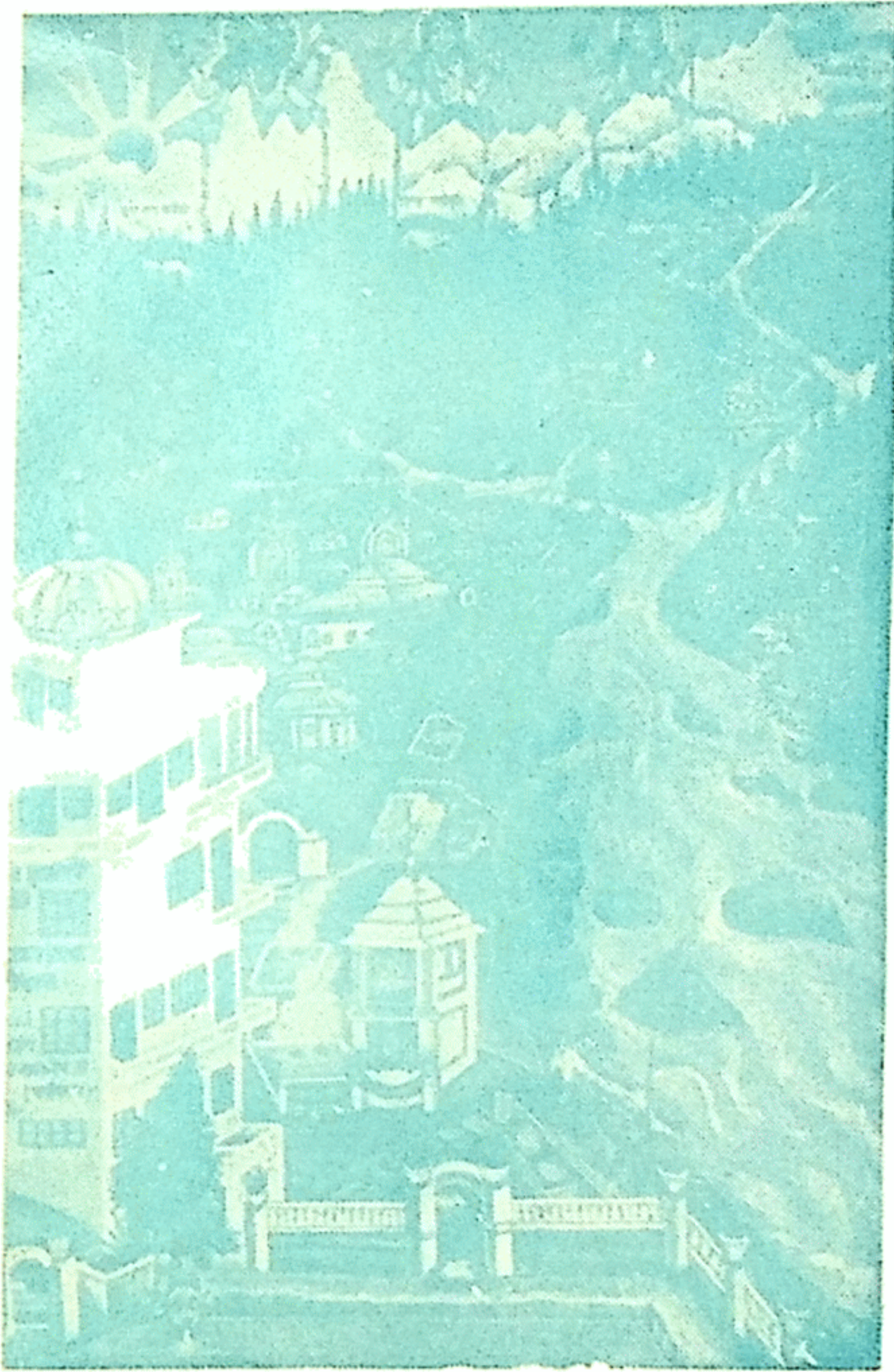
चार वेद छः शास्त्र विच बात मिली है दाय ॥

सुख देने सुख होत है, दुख देने दुख होय ॥

ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री गुरु नानक देव जी, हरि हर घाट

मनीकरण (जिला कुल्लू) हिमाचल प्रदेश ।

पिन कोड । १७५१२५



मनीकरण तीर्थ राज तथा गुरुद्वारा साहिब के दर्शन

श्रीमान् संत दादा नारायण हरि जी



दादा जी ने अपना सारा जीवन इस महान् स्थान को समर्पित किया हुआ था
और अपने अंतिम पावन श्वास तक इसकी सेवा संभाल की ।